Q.1 अर्थशास्त्र की क्षेत्र एवं प्रकृति का वर्णन करे।

Ans→ हम जानते है कि अर्थशास्त्र का संबंध आर्थिक क्रियाओं से है। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत अध्ययन की जाने वाली समस्त चीजे अर्थशास्त्र के क्षेत्र में शामिल है। अर्थशास्त्र के क्षेत्र को अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए हम निम्नलिखित बातो का अध्ययन करते है।—

(i) Nature of Economics.
(ii) Subject matter of Economics.
(iii) Limitations and assumptions of Economics.

i) अर्थशास्त्र की प्रकृति :-

इसके अन्तर्गत हम यह जानने का प्रयास करते है कि अर्थशास्त्र कला है, विज्ञान है, अथवा दोनो है। किसी भी शास्त्र को हम विज्ञान तभी कह सकते है जब वह निम्नलिखित चार शर्तो को पूरा करे -

a) विज्ञान के अध्ययन का एक क्रम होता ~~चाहिए~~ है।
b) अपना एक सिद्धान्त एवं नियम होना चाहिए।
c) इसमें कारण एवं परिणाम में संबंध स्थापित करने का गुण हो।
d) इसके नियमों में सर्वभौमिक सत्यता का गुण हो।

अर्थशास्त्र उपर्युक्त चारो शर्तो को पूरा करता है क्योंकि अर्थशास्त्र का अध्ययन क्रमबद्ध रूप से किया जाता है। जैसे सबसे पहले अर्थशास्त्र में उपभोग का अध्ययन किया जाता है।

उपभोग क्रिया की पूर्ति के लिए उत्पादन की आवश्यकता पड़ती है, अतः उपभोग के बाद उत्पादन, उत्पादन के बाद विनिमय और विनिमय के बाद वितरण की आवश्यकता होती है और इनका क्रमबद्ध अध्ययन हम अर्थशास्त्र में करते हैं। अतः प्रथम शर्त के अनुसार अर्थशास्त्र विज्ञान है।

दूसरे विज्ञान की तरह अर्थशास्त्र का भी अपना नियम एवं सिद्धान्त है जैसे- माँग एवं पूर्ति का नियम, उत्पत्ति ह्रास नियम, बाजार में कीमत निर्धारण का सिद्धान्त इत्यादि।

अर्थशास्त्र तीसरे शर्त को भी पूरा करता है कि क्योंकि इसमें हमें कारण पता हो तो परिणाम ज्ञात कर सकते हैं और परिणाम पता हो तो कारण ज्ञात कर सकते हैं। यह बेहद स्पष्ट है कि "मूल्य में होने वाला परिवर्तन वस्तु की माँग मात्रा में परिवर्तन कर देता है".

इसप्रकार अर्थशास्त्र विज्ञान होने के सभी शर्तों की पूर्ति करता है। अतः अर्थशास्त्र एक विज्ञान है, विज्ञान भी दो तरह के होते हैं – (i) वास्तविक विज्ञान (positive science)
(ii) आदर्श विज्ञान (Normative science)

प्राचीन अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान है, अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान कहने अर्थ है कि अर्थशास्त्र क्या है, कैसा है, उसके नियमों की खोज एवं विश्लेषण करना है उसकी आलोचना करना नहीं है। अर्थात् यह अर्थशास्त्र की वस्तुस्थिति को व्यक्त करता है।

जबकि आदर्श विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र यह बताता है कि इसे क्या होना चाहिए, कैसा होना चाहिए। यह नियमों की आलोचना करने के साथ यह बताता है कि उसमें क्या सुधार जरूरी है। आधुनिक अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र को आदर्श विज्ञान मानते हैं और जो सही भी है।

Thus, we can say Economics is both a possitive science and a normative science.

* अर्थशास्त्र कला के रूप में :-

हमारे वास्तविक जीवन में कला का अर्थ जीवन जीने के सही तरीकों के सलीके से है। कला हमें सही-गलत का ज्ञान कराती है। वास्तव में अर्थशास्त्र का कलात्मक गुण ही है जो अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान से आदर्श विज्ञान तक का सफर तय करने में सहायक सिद्ध होती है। कला ही यह बताती है कि जो त्रुटियाँ अर्थव्यवस्था में मौजूद है उसे सुधारा कैसे जायेगा। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री पिगू के अनुसार विज्ञान के दो रूप होते हैं – (i) ज्ञानदायक (ii) फलदायक

अर्थशास्त्र न सिर्फ एक देश की समस्याओं को बताता है बल्कि उसके समाधान को भी बताता है। जैसे :- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं उद्योग की पिछड़ी हुई स्थिति है, अर्थशास्त्र इसके कारण का विश्लेषण कर उसे ठीक करने के उपाय को बताता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि

अर्थशास्त्र में कला और विज्ञान दोनों के गुण वर्तमान है। अर्थात् Economics is both a Science and an Arts.

ii) अर्थशास्त्र की विषय सामग्री एवं क्षेत्र :-

अर्थशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र के विषय में अर्थशास्त्रीयों में मतभेद है। Prof. Marshall के अनुसार अर्थशास्त्र के अंतर्गत सामाजिक मनुष्य का अध्ययन किया जाता है। इसके विपरीत रॉबिन्स तथा उसके अनुयायियों के अनुसार अर्थशास्त्र में मानव का अध्ययन किया जाता है चाहे वह सामाजिक हो अथवा वन में रहने वाला साधु-सन्यासी। इन दोनों मतों में अधिकतर अर्थशास्त्री मार्शल के विचारों से सहमत है क्योंकि अर्थशास्त्र मानव के आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है जो एक सामाजिक मनुष्य के द्वारा ही आय, व्यय या विनिमय के द्वारा सम्पन्न होता है। साधु, दिवालिया और पागल की आर्थिक क्रियाओं से कोई संबंध नहीं अतः उपभोग, उत्पादन, विनिमय तथा वितरण अर्थशास्त्र की विषय सामग्री है। उपभोग का अर्थ आवश्यकताओं की पूर्ति करना है, उत्पादन का अर्थ आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए प्रयत्न करना है। विनिमय वस्तु एवं सेवाओं की अदला-बदली है जबकि वितरण उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को विभिन्न समूहों में विभाजित करने से है।

iii) Limitations of Economics :- अर्थशास्त्र की निम्नलिखित सीमायें है :-

a) अर्थशास्त्र केवल मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है।
b) अर्थशास्त्र में केवल सामाजिक मनुष्य का ही अध्ययन किया जाता है काल्पनिक का नहीं।
c) इसमें केवल वास्तविक मनुष्य का अध्ययन किया जाता है काल्पनिक का नहीं।
d) इसमें केवल सामान्य मनुष्यों का अध्ययन होता है चोर, डकैत, पागल और साधुओं का नहीं।
e) अर्थशास्त्र के नियम के दृष्टिकोण स्थिति और हालात बदलने पर बदल न जाते है। इसलिए हर नियम का वर्णन करते समय कहा जाता है - "यदि अन्य बातें समान रहे तो"

* Assumptions of Economics :-

a) अर्थशास्त्र यह मानता है कि मनुष्य विवेकशील होता है, वह बुरी वस्तु की अपेक्षा अच्छी वस्तु का चुनना पसंद करेगा।
b) जो वस्तु मनुष्य की आवश्यकता को अधिक संतुष्टि प्रदान करता है वह उसे औरों की अपेक्षा अधिक महत्व देता है।
c) मनुष्य पर आर्थिक क्रियाएँ अधिक एवं प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है और वह अपने सीमित साधनों से अधिकाधिक संतुष्टि प्राप्त करने का प्रयास करता है। जैसे विक्रेता अपनी वस्तु अधिक से अधिक मूल्य पर बेचना चाहता है जबकि क्रेता उस वस्तु को कम से कम मूल्य पर खरीदने का प्रयत्न करता है।

N